चेंजिंग द गेम: भारत में खेल में लड़कियों की भागीदारी बाल विवाह का अंत करने में कैसे मदद कर रही है

भारत में खेल का हजारों साल पुराना एक लंबा और समृद्ध इतिहास रहा है। देश में सबसे तेजी से बढ़ रहे प्राचीन सामूहिक खेल कबड्डी से लेकर अक्सर देश के सबसे अधिक लोकप्रिय मनपसंद खेल के रूप में प्रसिद्ध क्रिकेट तक।

भारतीय संस्कृति में विविध प्रकार के खेलों के समाहित होने के बावजूद लड़कियों और युवतियों को अक्सर खेल में भाग लेने नहीं दिया जाता है। यह स्थिति सामाजिक और लैंगिक मान्यताओं के कारण है जो इस बात के इर्द-गिर्द घूमती हैं कि लड़कियों को "अच्छा" और अंततः "विवाह-योग्य" होना चाहिए।

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स: द ग्लोबल पार्टनरशिप टु एंड चाइल्ड मैरेज में हम अपनी सदस्य संस्थाओं के साथ मिलकर काम कर रहे हैं कि खेल में भागीदारी की मदद से लैंगिक मान्यताओं में बदलाव लाया जाए। उद्देश्य यह दिखाना है कि लड़कियाँ जो भी चाहें हासिल कर सकती हैं और विवाह ही एकमात्र लक्ष्य नहीं है।

हमने झारखंड की युवा कार्यकर्ता प्रियंका कुमारी, आयु 21 वर्ष, से यह जानने के लिए बात की कि वह बाल विवाह का अंत करने के आंदोलन में खेल को क्यों महत्वपूर्ण मानती हैं और कैसे लड़कियों को खेलने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स: **प्रियंका, आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा! क्या आप हमें अपने बारे में कुछ बताएंगी?**

प्रियंका: मेरा नाम प्रियंका कुमारी है। मैं महिला मुक्ति संस्था से कार्यकर्ता के रूप में जुड़ी हूँ। मैं चार गांवों में युवतियों और लड़कियों के समूहों से, उनके माता-पिता से और अन्य प्रमुख लोगों से बाल विवाह, कम उम्र में विवाह और जबरन शादी के विषय पर चर्चा करती हूँ। मैं उन्हें इस प्रथा को रोकने के लिए प्रेरित करना चाहती हूँ ताकि लड़कियों का विवाह कम उम्र में न हो।

“मैं ऐसे समाज का हिस्सा बनना चाहती हूँ जिसमें जो कार्य लड़के कर सकते हैं वह कार्य लड़कियां भी कर सकें।”

समाज सेवा करने के साथ-साथ मैंने स्नातक की शिक्षा प्राप्त की है और अब पी.जी. की पढ़ाई शुरू करने वाली हूँ। मैं सिलाई और कंप्यूटर के प्रशिक्षण का भी आनंद ले रही हूँ।

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स: **आपको स्नातक होने की बधाई! लगता है बाल विवाह, कम उम्र में विवाह और जबरन शादी को रोकने के लिए आप बहुत अच्छा काम कर रही हैं। इसके लिए आप क्या सब करती हैं?**

प्रियंका: युवतियों के समूहों के साथ सत्रों के माध्यम से मैं उन्हें लैंगिक भेदभाव, बाल विवाह और कम उम्र में विवाह के चलते लड़कियों के जीवन में आने वाली परेशानियाँ, पितृसत्ता, प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकार आदि विषयों की जानकारी देती हूँ। सत्र के बाद हम साथ-साथ फुटबॉल खेलते हैं और मैं लड़कियों को बाहरी खेल खेलते रहने के लिए प्रेरित करती हूँ।

मैं उनके अभिभावक, पंचायत प्रतिनिधि, आंगनवाड़ी सेविका/सहायिका, धर्मगुरु एवं समाज के प्रमुख लोगों के साथ बैठक कर बाल विवाह, कम उम्र में विवाह एवं जबरन शादी की रोकथाम के लिए उन्हें भी प्रेरित करती हूँ।

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स: **संवादों और खेल खेलने का संयोजन सही में रोचक लगता है। बाल विवाह जैसे विषयों पर लड़कियों के खेल खेलने का क्या प्रभाव होता है?**

प्रियंका: जब लड़कियाँ बाहरी खेलों में भाग लेती हैं, तो उनके आपसी संबंध मजबूत होते हैं और उनमें सहयोग भावना पनपती है। वे अपनी समस्याओं को एक दूसरे से कह सकती हैं और इस तरह की बातें कर सकती हैं कि बड़े होने के साथ-साथ उनके शरीर में क्या बदलाव आ रहे हैं। उन्हें सीखने का मौका मिलता है और साथ ही वे अपनी बातों को खुलकर रख पाती हैं।

बाल विवाह जैसी समस्याएं और लैंगिक असमानता एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। यदि लड़कियों को किसी अन्य लड़की के कम उम्र में विवाह या जबरन शादी की खबर मिलती है, तो वे समूह में इसे साझा कर सलाह ले सकती हैं।

खेलने से और बाहरी खेलों में भाग लेने से बाल विवाह रोकने के विभिन्न तरीके सामने आते हैं।

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स: **खेलों में भाग लेने की कोशिश करते समय लड़कियों को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?**

प्रियंका: जब बात बाहरी खेल की हो, तो लड़कियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पहला, उन्हें घर पर विरोध का सामना करना पड़ता है क्योंकि परिवार के सदस्यों को चिंता होती है कि खेलने में लड़कियाँ चोटिल हो सकती हैं। फिर खेलते समय लड़कों के तंग करने की वजह से छोटे कपड़े पहनने पर रोक लगती है जबकि खेलने के लिए ये कपड़े सबसे अच्छे होते हैं। इस प्रतिकूल वातावरण के चलते बहुत-सी लड़कियां शर्म महसूस करती हैं या डर जाती हैं।

"लड़कियों को भी बाहरी खेलों में भाग लेने को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि समाज में लड़कियों और महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में विकास हो।"

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स: **यह तो सही में बहुत मुश्किल लगता है। तो आप लैंगिक समानता के लिए अपने काम में खेल का उपयोग किस तरह करना चाहती हैं?**

प्रियंका: बचपन से ही लड़कियों के साथ भेदभाव किया जाता है — और यह खेल में भी होता है। लड़कियों से अपेक्षा की जाती है कि वे किचेन सेट और गुड़ियों से घर के अंदर खेलें जबकि लड़कों को फुटबॉल और क्रिकेट जैसे खेल खेलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। लैंगिक समानता में योगदान के लिए लड़कियों को भी बाहरी खेलों में भाग लेने को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि समाज में लड़कियों और महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में विकास हो। मैं ऐसे समाज का हिस्सा बनना चाहती हूँ जिसमें जो कार्य लड़के कर सकतें हैं वह कार्य लड़कियां भी कर सकें।

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स: **हम आपकी बात से सहमत हैं! क्या आपके कोई पसंदीदा खिलाड़ी हैं जिनका आप सम्मान करती हों?**

प्रियंका: हाँ, हमारे राज्य के महेंद्र सिंह धोनी मेरे पसंदीदा बल्लेबाज हैं। वह राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के कप्तान थे। मैं उनका सम्मान करती हूँ क्योंकि उनकी निर्णय लेने की क्षमता सराहनीय है। वह टीम को एक सूत्र में बांध कर रखते हैं और अपनी टीम को प्रेरित करते हैं। वह हार-जीत से ज्यादा टीम को बना कर रखने में विश्वास करते हैं और अंततः इसी से तो टीम को जीत मिलती है!

गर्ल्स नॉट ब्राइड्स: **उन लड़कियों और युवतियों को आपकी क्या सलाह है जो किसी खेल में जाना तो चाहती हैं पर उन्हें बाधाओं या भेदभाव का सामना करना पड़ता है?**

प्रियंका: लड़कियों और युवतियों को सबसे बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ता है कि परिवार के लोग अपनी बेटियों के लिए सबसे अधिक प्राथमिकता विवाह को देते हैं। खेल में भागीदारी से उनके परिवारों में डर का एक माहौल पैदा हो जाता है कि यदि खेलते समय उन्हें शारीरिक रूप से चोट पहुंचेगी या हाथ-पैर टूट जाएंगे, तो उन्हें शादी के लायक नहीं समझ जाएगा।

मैं उन लड़कियों और युवतियों को बोलना चाहूंगी कि बाहरी खेल खेलने से होने वाले जिन खतरों के बारे में उन्हें बताया जाता है उससे कहीं अधिक लाभ खेल खेलने से होता है। जैसे कि शारीरिक रूप से फिट रहना, स्वास्थ्य का अच्छा रहना, उनके अन्दर नेतृत्व और निर्णय लेने की क्षमता का वृद्धि होना।

एक और बड़ी बाधा है कि लड़कियों के खेलों को अधिक निवेश या संसाधन नहीं मिलते हैं। संस्थाओं और परिवारों को यह सहायता देनी चाहिए ताकि खेलों को लड़कियों और युवतियों के लिए सुलभ बनाया जा सके। जब समाज यह देख लेगा कि लड़कियों के खेलों में अधिक भाग लेने के क्या-क्या लाभ हैं, तो शायद धीरे-धीरे इसमें निवेश बढ़े।

यदि ऐसा होता है, तो लड़कियां भारत में और अन्य सभी जगहों में खेल में भाग लेकर बहुत आगे बढ़ सकती हैं! मुझे आशा है कि बाल विवाह, कम उम्र में विवाह और जबरन शादी का अंत करने में इन सबका योगदान होगा ताकि लड़कियाँ अपने जीवन और भविष्य के विषय में निर्णय ले सकें।

प्रियंका भारत के रांची शहर में आयोजित तीन-दिवसीय वर्कशॉप का हिस्सा थीं जिसमें खेलों के माध्यम से युवा लोगों के साथ स्त्री-पुरुष संवादों को प्रारंभ करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस वर्कशॉप का आयोजन गर्ल्स नॉट ब्राइड्स और सदस्य संस्था प्रो स्पोर्ट डेवलपमेंट के सहयोग से किया गया था।